PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 7, ISSUE 2

लक्ष्मी का स्वागत (एकांकी) में पुरुष संवेदना एवं नारी विमर्श

श्रीमती रोशनी नायक
(असिस्टेंट प्रोफेसर)
भाषा विभाग (हिंदी)
प्रेरणा वाणिज्य महाविद्यालय, नागपुर,
महाराष्ट्र भारत

शोध सारांश(Abstract):-

हमारे समाज में दहेज़ प्रथा नारी उत्पीड़न प्राचीन काल से चली आ रही हैं, परंतु आधुनिक युग आते आते इस उत्पीड़न का स्वरूप में बहुत अधिक बदलाव नहीं हुआ है। उपेन्द्रनाथ 'अश्क' ने इस एकांकी में नारी उत्पीड़न और दहेज़ प्रथा तथा नारी के प्रति समाज के दृष्टिकोण को भी गंभीर रूप से समाज के सामने प्रस्तुत किया है इसी एकांकी में पुरुष संवेदनाओं की मानसिकता को भी उजागर किया है जो समाज की ऐसी विचारधारा को बदलने में सहायक सिद्ध होगी। इस एकांकी में नारी विमर्श से संबंधित सभी तत्व का समावेश है जो नारी विमर्श को एक नई दिशा देती है, क्योंकि इस एकांकी में किसी स्त्री ने यह प्रश्न नहीं उठाया बल्कि एक पुरुष ने इस प्रश्न को उठाया है । कुछ पुरुषों में नारी के प्रति प्रेम ,आदर और उन्हें समझने वाले प्रवृत्ति तो हैं। जो नारी चिंतन को नई दिशा देंगे।

बीच शब्द(Keywords):- नारी उत्पीड़न/नारी विमर्श, दहेज प्रथा, पुरुष संवेदनाओं की मानसिकता, भारतीय समाज में नारियों की स्थिति।

उद्देश्य और महत्व(Objective):-

1.नारी विमर्श से संबंधित सभी तथ्यों को जानने के लिए सहायता प्राप्त होगी ।

2.दहेज प्रथा हमारे समाज के लिए इतनी ताकतवर क्यों है? इसके क्या- क्या कारण है यह समझने में सहायता प्राप्त होगी ।

3.नारियों के प्रति नारियों के मन में इस तरह की भावना क्यों पनपती है इसे जान पाएंगे।

4.भारतीय समाज में 50% जनसंख्या स्त्री है जो कि राष्ट्र के विकास के लिए सहायक है उन्हें उपेक्षित क्यों रखा गया है इसके कारणों को जान पाएंगे ।

5.21वीं सदी में प्रवेश करने पर भी हमारा समाज स्त्री के प्रति अपनी मनोवृति को क्यों नहीं बदल पा रहा है इसे स्पष्ट कर पाएंगे।

6.स्त्री सांस बनने के बाद दूसरी स्त्री के प्रति संवेदनहीन क्यों बन जाती है इसे जान पाएंगे।

7. इस कहानी के माध्यम से नारी- विमर्श का यह प्रश्न एक पुरुष ने उठाया है इससे भविष्य में क्या लाभ होगा इसे जान पाएंगे। और नारी विमर्श से संबंधित जितने भी साहित्य उपलब्ध होंगे ,उसे समझ पाएंगे।

8.बाल विवाह , दहेज़ प्रथा, सती प्रथा, भ्रूण हत्या ,विधवा प्रथा आदि के कारणों से अवगत होंगे । नारी विमर्श समाज के लिए एक गंभीर प्रश्न क्यों बन गया है, उसे समझ पाएंगे।

प्रस्तावना(Introduction):-

प्रस्तुत एकांकी 'लक्ष्मी का स्वागत' प्रमुख साहित्यकार 'उपेन्द्रनाथ अश्क' द्वारा रचित है जो सामाजिक समस्या से संबंधित है । उपेंद्र नाथ 'अश्क' ने ऐसे तो बहुत सारे उपन्यास, नाटक ,कहानी, एकांकी लिखा है परंतु उनमें से एक महत्वपूर्ण एकांकी "लक्ष्मी का स्वागत" है । जिसके माध्यम से लेखक ने दहेज़ प्रथा की समस्या को उजागर किया है तथा वही नारी विमर्श और नारी अस्मिता के प्रश्नों को भी समाज के सामने उठाया है। प्रस्तुत एकांकी "लक्ष्मी का स्वागत" एक सामाजिक प्रथा को चित्रित करने वाली एकांकी है जो समाज में आज भी व्याप्त है तथा जिसके कारण आज भी समाज में स्त्रियां प्रताड़ित होते आ रही

है स्त्रियां ही नहीं ,संपूर्ण परिवार प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होता है। दहेज़ प्रथा के कारण ही बाल विवाह, पुनर्विवाह, सती प्रथा तथा बेमेल विवाह की समस्या उत्पन्न हुई है यह एकांकी स्त्री विमर्श के अंतर्गत आती तो है किंतु ,पुरुष संवेदना को भी बड़ी मार्मिक ढंग से चित्रित करती है । इस एकांकी का प्रमुख पात्र 'रोशन' जो अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करता है और उसके चले जाने के बाद अपने पुत्र के साथ उसके वियोग को भुला नहीं पा रहा है । तभी,उसे एक झटका लगता है उसके,पुत्र को 'डिप्थीरिया' नामक रोग हो जाता है और उसकी मृत्यु हो जाती है । ऐसी अवस्था में रोशन अपने पुत्र की मृत्यु के दुःख को सहन नहीं कर पाता और उसकी अंतरात्मा प्रश्न करती है कि ,यह कैसा निर्लज्ज समाज हैं जो किसी की भावनाओं को नहीं समझता? यह कैसा रिवाज़ है जो एक स्त्री के चले जाते ही दूसरी स्त्री के आवागमन की व्यवस्था करता है । यह कैसा समाज है जो स्त्री को एक वस्तु के रूप में समझता है कि एक स्त्री के चले जाने के बाद दूसरी लड़की की व्यवस्था कर देता है। इस एकांकी में रोशन अपने माता-पिता द्वारा दूसरी लड़कियों का शगुन लेने से मना कर देता है और अपने माता-पिता के विरोध के माध्यम से वह समाज में उपस्थित ऐसी परंपरा, रीति-रिवाज और मानव संवेदनहिन प्रवृत्ति का विरोध करता है और नारी -विमर्श, नारी चिंतन को एक नई- दिशा देने का प्रयत्न करता है और हमें नारी विमर्श के प्रति सोचने के लिए मजबूर करता है तथा रोशन अपनी पत्नी 'सरला' के माध्यम से संपूर्ण स्त्री की अस्मिता के प्रश्न को समाज के सामने प्रस्तुत करता है। क्योंकि ,जब एक पुरुष नारी विमर्श की चर्चा का प्रश्न उठा कर उसकी अस्मिता की बात करता है तो कहीं ना कहीं पुरुष प्रधान समाज उस प्रश्न पर विचार जरूर करता है जो समाज को बदलने में मददगार हो सकता है और नारी चिंतन को एक नई दिशा देने में समर्थ हो सकता है।

इस एकांकी को और अधिक स्पष्ट रूप से समझने के लिए इसी कथावस्तु को समझना जरूरी है तथा साथ ही पात्र और उसके चरित्र को भी जानना अनिवार्य है ।

एकांकी की कथावस्तु और पात्र :-

प्रस्तुत एकांकी की शुरुआत जिला 'जालंधर' के इलाके के मध्यम श्रेणी के एक मकान का 'दालान' से शुरू होता है ।जिसमें रोशन एक शिक्षित व्यक्ति तथा सुरेंद्र उसका मित्र है भाषी उसका छोटा भाई है तथा अरुण उसका का बेटा है इसके अलावा रोशन के पिता ,रोशन की

माता एवं डॉक्टर का उल्लेख मिलता है। एकांकी की शुरुआत इस प्रकार से होती है कि रोशन का बेटा बीमार है उसे डिप्थीरिया(गले का रोग) नामक बीमारी हो जाती है जिसके कारण उसका बचना असंभव है। तेज बारिश हो रही है और रोशन डॉक्टर इंतजार करता हुआ , परेशान होकर इधर-उधर टहल रहा है तभी, सुरेंद्र , भाषी और डॉ. आते हैं । डॉक्टर अरुण को चेक करते हैं और बताते हैं कि अब उनका बचना मुमकिन नहीं है तभी रोशन के माता-पिता रोशन के लिए सियालकोट का आया हुआ रिश्ता स्वीकार करते हैं और सुरेंद्र को रोशन को मनाने के लिए कहते हैं । रोशन इसका घोर विरोध करता है एक तरफ रोशन के बेटा की मौत हो जाती है और दूसरी तरफ़ उसका शगुन स्वीकार कर लिया जाता है । इन दोनों ही स्थिति से आहत होकर रोशन भावुक हो जाता है और समाज के सामने नारी -विमर्श का प्रश्न खड़ा करता हैं ।

नारी विमर्श का केंद्र :-

'लक्ष्मी का स्वागत' 'एकांकी' के लेखक श्री 'उपेंद्र नाथ' रोशन के माध्यम से नारी उत्पीड़न तथा नारियों की दशा और दिशा के संबंध में अपने विचार व्यक्त करने के लिए हमारा ध्यान आकृष्ट करते है कि प्राचीन काल से लेकर अब तक नारियों की स्थिति और दशा में किसी भी तरह का कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है ।वैसे तो हमारी आबादी में 50% की भागीदारी स्त्रियों की हैं किंतु,शारीरिक कमजोरी और शारीरिक बनावट के कारण आज भी स्त्रियों को पुरुषों से कम माना जाता है ।आज भी हमारे समाज में लड़का- लड़की में भेदभाव किया जाता है । हमारे संविधान में स्त्रियों को समानता का दर्ज़ा दिया गया है और उसमें अमल भी किया जाता है किंतु आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में उनकी स्थिति में सुधार नहीं आया है आए दिन हम समाचार और न्यूज़ में स्त्रियों को दहेज़ के कारण जलाये जाने या उनकी हत्या कर देने की खबर सुनते ही रहते हैं ।

आज हमारे समाज में दहेज़ प्रथा, बाल विवाह, वेश्यावृत्ति ,विधवा विवाह, बहुपत्नी विवाह आदि के बारे में हम सुनते ही रहते हैं नारियों को शारीरिक यातना के साथ साथ मानसिक यातना का भी सामना करना पड़ता है ।

उदा. यदि किसी स्त्री का विवाह तय किये हुए दहेज़ के हिसाब से नहीं हुआ तो उसे ससुराल वाले के ताने तो सुनना पड़ता ही है साथ ही कभी-कभी तो दहेज़ के कारण उसके पति का दूसरा विवाह करा दिया जाता है या उसका पुरुष ही दूसरी स्त्री से संबंध बना लेता है। ऐसी स्थिति में उस स्त्री को मानसिक यातना सहन करनी पड़ती है क्योंकि वह समाज के सामने अपना मुंह नहीं खोल सकती और ना ही अपने माता-पिता के घर जा सकती हैं एक तरफ तो समाज का डर दूसरी तरफ़ मां-बाप की इज्ज़त का प्रश्न है इन सारी समस्याओं का सामना करते हुए या तो बहुत सारी परेशानियों को अकेले ही झेलती है या उसे अपना भाग्य समझकर मानसिक यातना सहन करती है। कभी-कभी तो आत्महत्या भी कर लेती है जिसके कारण उसके माता -पिता और उसके बाल बच्चों को भी अप्रत्यक्ष रूप दुःख ,कष्ट और अनाथ जीवन जीने के लिए मजबूर होना पड़ता है क्योंकि मां का स्थान कोई नहीं ले सकता संबंध में एक पंक्ति है-

मां तू अंबर, मां तू कबंल सारा
कष्ट सह लेती है,अपना भूखा सो कर,
मां तू ,सबका पेट भर देती है ।

एक स्त्री जो एक मां ,पत्नी और बेटी होती है जो समर्पण की देवी होती है जो केवल अपने त्याग और बलिदान से केवल अपने परिवार का संचालन ही नहीं करती बल्कि, पूरे विश्व के लिए एक मिसाल है फिर स्त्री जातियों के साथ इस तरह का व्यवहार क्यों ?

यदि किसी परिवार में एक बेटा विधुर हो जाता है तो उस विधुर के विवाह के लिए उसके माता- पिता उसके लिए नववधू को तलाशना शुरू कर देते हैं । एक तरफ तो बेटे का घर बसाना है तो ,दूसरी तरफ दहेज़ की आकांक्षा। जिस के लालच में आकर लड़के के माता-पिता अपने बेटे की दूसरी शादी करवा देते हैं। लेखक यहां प्रश्न करते हैं कि रोशन की मां कैसी मां है? जो एक स्त्री होते हुए भी दूसरी स्त्री की भावनाओं को नहीं समझ पाती । यह कैसी स्त्री है जो ,अपने पोते के मुख को देख कर भी दया,ममता ,करुणा से पिघल नहीं जाती जो बीमार बच्चे को देख कर भी अनदेखा करती है। यह भी तो एक स्त्री ही है किंतु, इसका स्वरूप कैसा है। यह क्यों ? इतनी निष्ठुर है ,जो समय का आकलन न करते हुए ,परिस्थिति को न भापते हुए ,अपने बेटे रोशन की भावनात्मक एवं मानसिक स्थिति को भी

नहीं समझ पाती है। अपने पोते की बीमारी को अनदेखा करके अपने पुत्र रोशन का शगुन स्वीकार कर खुशी मनाती है तभी उसके पोते की मौत हो जाती है और सुरेंद्र द्वारा यह कहना;-

' दाने लाओ , और दिये का प्रबंध करो' ।

यह संकेत है कि अब उसके घर का चिराग बुझ गया है और शोक की घड़ी आ गई है ।

इस एकांकी में नारी का प्रश्न को उठाने के साथ-साथ दूसरी स्त्री का भी वर्णन किया है जो एक स्त्री होकर भी दूसरे के दुःख को समझने का प्रयास नहीं करती। लोभ, लालच और पुत्र मोह के कारण अपनी ही जाति की विरोधी बन जाती है दहेज़ प्रथा का समर्थन करती है कहीं-कहीं तो यही लोभ और लालच के कारण वेश्यावृत्ति तक स्वीकार कर लेती है और अन्य स्त्रियों को भी अपने धंधे की ओर आकृष्ट करती है कुछ स्त्रियां मज़बूरी से लाचार होकर वेश्यावृत्ति अपनाती है । किंतु उन्हें बहलाने- फुसलाने का कार्य भी तो दूसरी स्त्री ही करती है यह एक बहुत गंभीर समस्या है।

आज स्त्रियां हर क्षेत्र में आगे हैं शिक्षा ,ज्ञान ,विज्ञान सभी में आगे हैं पर यह 'स्त्री' शब्द न जाने उनके मार्ग में बाधा उत्पन्न करती है ऐसी बहुत सी समस्याएं हैं जिस पर सामाजिक स्तर और विश्व स्तर पर विचार विमर्श करने की आवश्यकता है।

दहेज प्रथा :-

दहेज़ प्रथा हमारे समाज के लिए घातक है दहेज़ प्रथा के कारण न जाने कितनी ही लड़कियां अविवाहित रह जाती है न जाने कितनी ही लड़कियां तो बाल विवाह, बेमेल विवाह का शिकार हो जाती है क्योंकि माता -पिता के पास दहेज़ देने के लिए पर्याप्त धन नहीं होता है साथ ही गरीबी के कारण सुंदर और योग्य कन्या का विवाह भी अयोग्य व्यक्ति से करना पड़ता है दूसरा कारण जाति बंधन होने की वजह से अपनी जाति से बाहर विवाह करना वर्जित है इसलिए अधिकतर लड़कियां योग्य शिक्षित होने पर भी अयोग्य व्यक्ति की पत्नी बन जाती है दहेज़ न देने के कारण गरीब मजबूर पिता अपनी पुत्रियों का विवाह कम उम्र में ही कर देते हैं आजकल दहेज़ एक परंपरा बन गई है जो लड़का जितना योग्य और शिक्षित

होता है उसका मूल्य उतना ही लगाया जाता है। दहेज़ न देने के कारण स्त्रियों को ससुराल में खरी- खोटी सुननी पड़ती है । दहेज़ न देने पर उसे शारीरिक और मानसिक कष्ट दिया जाता है जिसके कारण या तो वह मर जाती है या तो सारे कष्टों को सहन कर अपनी पहचान खो कर एक कठपुतली बन कर रह जाती है। दहेज़ के कारण ही मां-बाप अपने बेटे के दो-तीन विवाह करवाने से भी नहीं हिचकते हैं ।इस एकांकी में भी दहेज़ प्रथा का स्वरूप दिखाई देता है जिसके कारण रोशन का दूसरा सगुन सियालकोट के रिश्तेदारों कि एक कन्या से करा दिया जाता है बिना अपने पुत्र की मानसिक प्रवृत्ति को समझे। जो कि एक गंभीर प्रश्न है ।

नारियों के प्रति पुरुष संवेदना:-

इस एकांकी में रोशन के माध्यम से समाज के कुछ शिक्षित और पढ़े-लिखे युवक या युवा वर्ग को उजागर करने का प्रयास किया है जो नारियों को उचित स्थान दिलाने के पक्ष में है जो एक तरफ तो अपनी पत्नी और बच्चे से प्रेम करते हैं और अपनी पत्नी के सम्मान और प्यार के लिए समाज से प्रश्न करते हैं कि ,क्या ? स्त्रियां कोई चीज होती है .जो एक के जाने के बाद दूसरा उसके स्थान पर आ जाती है क्या, स्त्रियां बच्चों को जन्म देने वाली एक मशीन है ? जो पूरे परिवार को संभालती है जो सोती तो देर से हैं किंतु ,उठती सबसे पहले हैं जो समर्पण की मूर्ति है तो, उसके साथ इस तरह का बर्ताव क्यों किया जाता है? इन सब प्रश्नों को उपेन्द्रनाथ 'अश्क ' ने रोशन के माध्यम से समाज के कुछ ऐसे पुरुषों का समर्थन किया है जो नारी को न्याय, सम्मान दिलाने के पक्ष में हैं । नारियों की समस्याओं और उनकी परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण अनेक पुरुष साहित्यकार द्वारा किया गया है जिसमें से भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रेमचंद ,महावीर प्रसाद द्विवेदी ,हजारी प्रसाद द्विवेदी, जयशंकर, निराला, प्रसाद,सुमित्रानंदन पंत, कमलेश्वर आदि अनेक पुरुष साहित्यकार हैं जिन्होंने अपने साहित्य में नारी विमर्श की चर्चा की है। प्रेमचंद ने अपने कथा लेखन में नारियों की स्थिति और उनके घुटन मान, सम्मान ,समर्पण ,त्याग आदि का वर्णन किया है तथा उनके साथ किए गए दुर्व्यवहार को भी चित्रित किया है जिसमें से गोदान ,निर्मला आदि प्रमुख रचनाएं हैं इसके अलावा अन्य लेखकों द्वारा राजा निरबंसिया, रोज कहानी ,कोसी का घटवार, परिंदे कहानी, ध्रुवस्वामिनी ,आषाढ़ का एक दिन आदि अनेक कहानियां और उपन्यास ,नाटक और

साहित्य रचित है जो नारी विमर्श का केंद्र बिंदु माना जाता है जो कि पुरुष साहित्यकार द्वारा रचित है। जो नारी के प्रति संवेदनशील है और जो स्त्रियों को उचित सम्मान और उचित स्थान दिलाने के पक्ष में हैं जिनके विचार नारी चिंतन को नई दिशा देते हैं।

भारतीय समाज में नारियों की स्थिति;-

भारत में स्त्रियों को सबसे पहले देवी के रूप में पूजा जाता था तथा स्त्रियों को समानता का अधिकार था। किंतु ,कालांतर में स्त्रियां भोग- विलास की वस्तु बन गई। जिसके परिणाम स्वरूप बहु पत्नी विवाह ,सती प्रथा, बाल विवाह प्रथा, विधवा प्रथा आदि का जन्म हुआ और इसका कुप्रभाव सबसे पहले स्त्रियों पर ही पड़ा। जिसके कारण स्त्रियां असुरक्षित हो गई तथा उन्हें बचाने के उद्देश्य से माता-पिता द्वारा कम उम्र में ही कन्या का विवाह कर दिया जाता था जिससे बाल विवाह का प्रचलन हुआ। विदेशी आक्रमण कर्ता भारत आये, तो उनकी बुरी नज़र से बचाने के लिए पर्दा प्रथा का जन्म हुआ। गरीब माता-पिता द्वारा अपनी कन्याओं के संपन्न परिवार में विवाह कराने के उद्देश्य से सती प्रथा का जन्म हुआ, क्योंकि गरीब कन्या का हाथ केवल वहीं पुरुष मांगते थे जो अधेड़ उम्र के थे या जिनको पहली पत्नी से संतान प्राप्त न हो, ऐसे व्यक्ति गरीब कन्याओं से विवाह करते थे । और उस अधेड़ उम्र के व्यक्ति के मर जाने पर उसकी चिता में उसकी पत्नी को सती कर दिया जाता था जिसके बाद सती प्रथा का जन्म हुआ। और सती प्रथा के बाद विधवा- प्रथा का जन्म हुआ। जिसमें स्त्रियों के खान-पान ,रहन-सहन सभी के मानक निर्धारित किये गए । और विधवा स्त्रियो की स्थिति और अधिक ख़राब होने लगी। इसके साथ ही योग्य लड़का अपने लिए अच्छे संपन्न परिवार की लड़की तलाशने लगा । जिससे दहेज़ प्रथा का जन्म हुआ। माता- पिता अपनी संतान की अच्छी गृहस्थी बसाने के उद्देश्य से जो कुछ भेंट भी देने लगे उसका दहेज़ में रूपांतरण होने लगा जिसे दहेज़ प्रथा का जन्म हुआ।जो दहेज़ न दे पाये वे कन्याऐ या तो अयोग्य व्यक्ति से विवाह कर अपना जीवन नष्ट कर लिया या बे-उम्र कुंवारी पड़ी रहीं।क्योंकि भारतीय समाज में विवाह करना अनिवार्य है नहीं तो,समाज के ताने सुनने पड़ते ही हैं ।कुछ स्त्रियां तो शादी न होने के कारण ग़लत मार्ग में चली जाती है या कुछ तो आत्महत्या कर लेती है। यदि पति सही रहा तो ठीक।नहीं तो, उसे जीवन भर पति और उसके परिवार को कमा कर खिलाना पड़ता है और उनके अत्याचार को सहना भी पड़ता है। एक अकेली लड़की को

हमारा भारतीय समाज अच्छी नज़र से नहीं देखता है ।आज शिक्षित स्त्रियों की समस्या भी गंभीर बन गई है उसे अपने परिवार को संभालने के अलावा बाहर काम भी करना पड़ता है उसे सांस- ससुर और पत्नी की ग़ुलाम बनकर रहना पड़ता है, पर उसे अपनी कमाई का एक हिस्सा अपने माता-पिता को देने का हक़ नहीं है। स्त्रियां केवल घर चलाने वाली नौकरानी और बच्चे को जन्म देने वाली मात्र मशीन मानी जाती है और रात को अपने पति को खुश करने वाली केवल एक वस्तु ।

यह स्थिति आज हमारे भारतीय समाज में हैं और जिसके कारण आज हमारे समाज में बलात्कार, वेश्यावृत्ति और स्त्री हत्याएं , स्त्री प्रताड़ना जैसे अनेक गंभीर अपराध दिखाई देते हैं इसके संबंध में कुछ प्रमुख विचार इस प्रकार हैं। जो नारियों की स्थिति को स्पष्ट करते हैं।

"यदि परिवार समाज का केन्द्र बिन्दु है, तो नारी इस बिन्दु का विस्तार है। अतः परिवार के अंतर्गत उसकी स्थिति एवं विकास को समझने के लिए हमें उसके माता, पत्नी के स्वरूप को समझना होगा तथा कानून के अन्तर्गत उसकी सामाजिक स्थिति पर विचार करना होगा। क्योंकि परिवार प्रदत्त अधिकार ही उसकी सामाजिक स्थिति के परिचायक है।"(2) इन उक्तियों के द्वारा स्पष्ट होता है कि नारी के बिना परिवार अधूरा है क्योंकि परिवार का केंद्र बिंदु ही नारी है जो एक माता और पत्नी के रूप में अपना अस्तित्व का परिचय देती है फिर भी ना जाने क्यों ? अस्तित्व विहीन है यही सवाल इस एकांकी में 'उपेन्द्रनाथ' 'अश्क' ने रोशन के माध्यम से किया है। और अनेक साहित्यकारों ने नारी विमर्श पर अपने विचार व्यक्त किए हैं अनेक साहित्य लिखे हैं जिनमें गंभीर रूप से नारी- विमर्श पर चर्चा की गई है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में पिछले दो-तीन दशकों से स्त्री लेखन में ज़्यादा उभार आया है किन्तु यह कड़ी महादेवी वर्मा के लेखन के साथ ही आरंभ हो गयी थी। आज भी जब स्त्री-लेखन में स्त्री जीवन और उसकी समस्याओं से जुड़ी बातों, स्त्री-पुरुष संबंधो कि तलाश की जाती है तो महादेवी वर्मा कि रचना 'श्रृंखला की कड़ियाँ' नामक निबंध संग्रह का उल्लेख करना लाज़मी हो जाता है। इन निबंधो में उनके द्वारा व्यक्त विचार वर्तमान स्त्री लेखन को एक रचनात्मक ऊर्जा प्रदान करती है। "आज हमारी परिस्थिति कुछ और ही है। स्त्री न घर

का अलंकार मात्र बनकर रहना चाहती है और न ही देवता कि मूर्ति बनकर प्राण-प्रतिष्ठा चाहती है। कारण वह जान गयी है कि एक का अर्थ अन्य कि शोभा बढ़ाना है। तथा उपयोग न रहने पर फेंक दिया जाना है तथा दूसरे का अभिप्राय दूर से उस पुजापे को देखते रहना है, जिसे उसे न देकर उसी के नाम पर लोग बाँट लेंगे।"(महादेवी वर्मा, 2012) अर्थात स्त्रियां अब समझ गई है कि परिवार और समाज में उनकी स्थिति क्या है और आत्मनिर्भर बनकर वह दोनों को जवाब देना चाहती हैं। जिस तरह महादेवी ने अपने विचार रखे हैं उसी तरह डॉ ज्योति किरण ने अपने विचार रखे हैं जो सशक्त महिला के गुणों की महानता को प्रकट करती है और समाज से विद्रोह या अपने हक़ की मांग करने वाली सशक्त स्त्री की बगावत को स्पष्ट करती है।

डाॅ ज्योति किरण के शब्दों में -" इस समाज में जब स्त्रियां अपनी समझ और काबलियत जाहिर करती हैं वह कुलच्छनी मानी जाती हैं,जब वह खुद विवेक से काम करती है तब मर्यादाहीन समझी जाती है।अपनी इच्छाओ, अरमानों के लिए जब वह आत्मविश्वास के साथ लड़ती हैं और गैर समझौतावादी बन जाती है,तब परिवार और समाज के लिए वह चुनौती बन जाती है।"5 (पंचशील शोध - समीक्षा - पृष्ठ 61) अर्थात जब स्त्रियां अपने समझ और विवेक से निर्णय लेती हैं और पुरूषों से आगे निकल जाती है तो यह पुरुष समाज स्त्रियों की प्रगति को सहन नहीं कर पाता है किंतु, इस एकांकी में रोशन इन सभी पुरुष से अलग है जो स्त्रियों के हक़ का समर्थन करता है । साथ ही लेखिका सिमोन द बोउआर के उक्त कथन महिला समाज में परिलक्षित होती है -"स्त्री की स्थिति अधीनता की है।स्त्री सदियों से ठगी गई है और यदि उसने कुछ स्वतंत्रता हासिल की है तो बस उतनी जितनी पुरुष ने अपनी सुविधा के लिए उसे देनी चाहिए। यह त्रासदी उस आधे भाग की है ,जिसे आधी आबादी कहा जाता है। "6 (आजकल : मार्च 2013 - पृष्ठ 24) अर्थात पुरुषों ने स्त्रियों को उतने ही अधिकार दिए हैं जितना पुरुषों के सम्मान में चोट न पहुंचे। परंतु 'लक्ष्मी का स्वागत' 'एकांकी' का रोशन अन्य पुरुषों से हटकर है जिसकी सोच नई और विकास शील हैं। स्त्रियों के शिक्षित और आत्मनिर्भर बनने के कारण स्त्री मुक्ति से जुड़े अनेक उन प्रश्नों से जुड़ी सामाजिक ,पारिवारिक एवं आर्थिक बेबसी और उससे उत्पन्न नारी की मनः स्थिति का चित्रण अनेक स्तरों पर हुआ है।"साठ के दशक और उसके संघर्ष का

अधिकांश इतिहास जागरूक होती हुई स्त्री का अपना रचा हुआ इतिहास है।नगरों एवं महानगरों में शिक्षित एवं नवचेतना युक्त स्त्रियों का एक ऐसा वर्ग तैयार हो गया था जो समाज के विविध क्षेत्र में अपनी कार्य क्षमता प्रमाणिक करने के लिए उत्सुक था। "7 (आजकल : मार्च 2011 - पृष्ठ 25) अर्थात स्त्रियां अपना अधिकार और हक़ समझ गई हैं। वंदना वीथिका के शब्दों में - "नारियों के लिए सबसे बड़ा अभिशाप उनकी अशिक्षा थी और उनकी परतंत्रता का प्रमुख कारण उनकी आर्थिक स्वतंत्रतता का अभाव था। आज स्थिति परिवर्तित हुई है।आज हर क्षेत्र का द्वार लड़कियों के लिए खुला है।वे हर जगह प्रवेश पाने लगी हैं - जमीं से आसमां तक- पृथ्वी से चांद तक। "8. (आजकल : मार्च 2013 - पृष्ठ 2) अर्थात स्त्रियां यदि अपने आप को शिक्षित कर लें तो वह अपने पैरों पर खड़े हो सकतीं हैं और समाज में क़दम क़दम मिलाकर चल सकती हैं।और यह केवल शिक्षा और अपने अस्तित्व के लिए लड़ने पर ही प्राप्त हो सकती है।

इन सभी के विचार को पढ़कर हम केवल यही कहेंगे कि स्त्री जब तक समाज से संघर्ष नहीं करेंगी अपने को उस योग्य नहीं बनाएंगी, तब तक समाज में परिवर्तन होने वाला नहीं है चाहे कितना भी कानून नियम बना ले।

निष्कर्ष:-

उपर्युक्त सारे चर्चा और विश्लेषण के आधार पर हम कह सकते हैं कि 'उपेन्द्रनाथ' 'अश्क' ने अपनी एकांकी 'लक्ष्मी का स्वागत 'में रोशन के माध्यम से नारी - विमर्श के प्रश्नों को उजागर किया है तथा साथ ही सामाजिक समस्या जैसे दहेज़ प्रथा, बाल विवाह पुनर्विवाह और वेश्यावृत्ति, लैंगिक शोषण जैसे अपराधों की ओर भी ध्यान दिलाया हैं। साथ ही रोशन की मां के माध्यम से हमारे समाज में विद्यमान अंधविश्वासी लोग, लालची और लोभी और मानव संवेदनहीन मनुष्यों के दर्शन भी कराए हैं और नारी अस्मिता पर प्रश्न भी उठाए हैं।

संदर्भ सूची

1. वीथिका-भाग-२ ,पाठ -६ लक्ष्मी का स्वागत (एकांकी) प्रथम संस्करण:२०१५ राघव प्रकाशन, वितरण पृष्ठ संख्या 36-48.
2. हिन्दी महाकाव्यों में नारी चित्रण - डॉ. श्याम सुन्दर व्यास, सत्यम प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ - 51.
3. विकिपीडिया.
4. महादेवी वर्मा, शृंखाला की कड़ियाँ, लोकभारती पेपरबैक्स, इलाहाबाद, 2012.
5. पंचशील शोध - समीक्षा - पृष्ठ 61.
6. आजकल : मार्च 2013 - पृष्ठ 24साहित्य.
7. आजकल : मार्च 2011 - पृष्ठ 25.
8. आजकल : मार्च 2013 - पृष्ठ 27.
9. विश्वहिंदीजन चौपाल.
10. सामाजिक विज्ञान में प्रगति के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल